व्यंग्य

मेडिकल शॉपिंग की बीमारी

■ ज्ञान चतुर्वेदी

डॉक्टर के चेम्बर के बाहर बैठा है वह।

हाथ में मोटी फाइलें, जिनमें पचासों रिपोर्टें, बहुत से एक्सरे, सीटी स्केन वगैरह। तब तो वह बीमार होगा बेचारा? नहीं ऐसा कोई खास बीमार नहीं। पेटदर्द। बस। वैसे मधुमेह भी है। पर अन्यथा सब ठीक ठीक। फिर उसकी इतनी मोटी फाइलें कैसे? जरुर उसे डाक्टरों ने भटकाया होगा। फाल्तू की जांच कराई होगी। ढेर सी बेकार की दवाइयाँ दी होंगी। ये आजकल के डाक्टर बड़े हरामी हो गये हैं, साहब। तभी तो स्सालों पर इतने मुकदमे और चाहे जब क्लीनिकों की तोड़फोड़। .... नहीं। वो बात नहीं है। तो? ये मोटी फाइलें इस शख्स के खुद के अथक प्रयन्तों का नतीजा हैं। डॉक्टर तो इसे पचासों बार बता चुका कि यार तुम्हें कुछ नहीं है और सब ठीक–ठाक है। बस, डायबिटीज ठीक रखो। दवाइयाँ लेते रहो। व्यायाम करो । खाने का ध्यान धरो। सिगरेट ना पियो। ... पर उसे विश्वास ही नहीं होता है। उसे हमेशा लगा रहता है कि कहीं इस डॉक्टर से कुछ चूक तो नहीं हो रही? हां भाई, डॉक्टर है, भगवान तो नहीं। यह तो जरुरी नहीं कि इसे सब आता हो। तो? तो यही कि वह है तो इसी डॉक्टर का स्थाई मरीज, पर शहर के हर डॉक्टर को दिखा चुका है। कोई नई क्लीनिक खुले, किसी नये डॉक्टर का नाम सुने, कहीं बाहर का कोई डॉक्टर आकर केंप लगाये – वह अपने सब रिकॉर्ड लेकर वहाँ खड़ा मिलेगा। तो क्या कुछ नया निकला? नहीं वो तो खैर नहीं। पर चलिये कि तसल्ली हो गई कि सब ठीक चल रहा है । इस चक्कर में अपनी फाइल तनिक मोटी जरुर हो गई – बल्कि एक और बनानी पड़ी और तीसरी भी बनानी पड़ सकती है – हो सकता है कि इतनी बनानी पड़ जाये कि ठेले पर धर के चलना पड़े..... पर ठीक ही रहा।

फिर यहाँ क्यों बैठा है वह?

अपने डॉक्टर को तो सब बताना ही पड़ता है न। पिछले हफ्ते बम्बई गया था वह। किसी टूर पर। या शायद किसी दोस्त के घर किसी फंक्शन के सिलसिले में। रास्ते में बाम्बे हास्पीटल पड़ा, तो सोचा कि क्यों न बम्बई प्रवास का लाभ उठा लिया जाये। अपनी फाइलें तो साथ में थी ही। मेडिकल रिकॉर्ड साथ ही लेकर चलता है वह। न जाने कहां आवश्यकता पड़ जाये। सो उतरकर वहां का अपॉइंटमेंट ले लिया और सारी जांचें सौवीं बार फिर करा डालीं। पंद्रह– एक हजार ठुक गये पर तसल्ली हो गई कि वे भी यही कह रहे रहे हैं कि तुम्हें कुछ भी नहीं है। अब वे ही सारे रिकॉर्ड तरतीबवार लगाकर वह अपने डॉक्टर को दिखाने आया है। वह चाहता है कि इन सबको उसका स्थानीय डॉक्टर भी देख ले कि कहीं बम्बई वालों से कुछ गलती तो नहीं हुई है। इससे पहले वह इसी डॉक्टर को इसी साल में दिल्ली, बस्ती, अहमदाबाद, इंदौर, फगवाड़ा तथा दमोह वाली रिपोर्टें भी दिखला चुका है। इन शहरों में वह घूमने, ग़म में, किसी को देखने, शादी में या यूँ ही गया था – और गया तो सोचा कि क्यों न जाँच भी करा ही लें। तो रिपोर्टों और डॉक्टरी राय के आधार पर देखें तो वह एक अखिल भारतीय किस्म के मरीज की

हैसियत रखता है जैसे कि अखिल भारतीय किस्म के कवि हुआ करते हैं। उसके हाथ में इंटरनेट के कुछ प्रिंटआउट भी हैं।

'आजकल यह इंटरनेट का बढ़िया निकल आया है साहब' – वह पड़ोस में बैठे मरीज को बता रहा है। 'गूगल सर्च' पर जाओ और पेटदर्द छाप दो। बस, इतना सारा सामने आ जाता है कि देखकर इतना सरदर्द हो जाये कि पेटदर्द भूल जाओ। एकदम नई–नई बातें। नई जांचें। नई दवाइयाँ। डॉक्टर तक को पता नहीं होती यार। खुद इंटरनेट में देखते रहा करो। हम तो भैय्या यही करते हैं। फिर प्रिंटआउट निकालकर डॉक्टर के पास।' इंटरनेट पर तो यह लिखा है डॉक्टर साहब, जबकि आप कुछ और कह रहे थे। बड़ा फर्क डाल दिया है साब इंटरनेट ने। हम तो जो नया देखते हैं, छापकर दिखा देते हैं डॉक्टर भी स्साला घबराया रहता है कि मरीज को कित्ती नॉलिज है – बेवकूफ नहीं बना पाता वह। सच्ची।

इसके अलावा उसके पास कुछ अखबारी खबरों की कटिंग्स भी हैं जिनमें विज्ञापनों, खबरों का गॉसिप में बताया गया है कि आजकल ऑपरेशन द्वारा मधुमेह पूरी तरह ठीक हो सकती है। आयुर्वेदिक वालों ने भी कोई बूटी खोजी है। कि जो मधुमेह को जड़ से मिटा सकती है, कि दूध एकदम बंद कर दें तो पेटदर्द ठीक हो सकता है, कि होम्योपैथी से डेंगू और केंसर का शर्तिया इलाज हो सकता है और ऐसी ही न जाने कौन–कौन सी अटकलपच्चू जानकारियाँ। वह आयुर्वेदिक डॉक्टर से तो यूँ भी मिलता ही रहता है। और अपने डॉक्टर को यह सांत्वना देता हुआ कहता है कि गोली हम आपकी ही खाते हैं। वैसे उसने होम्योपैथी भी ट्राई की है। झाड़फूंक के एक बाबा के संपर्क में भी वह रहता ही है।

उसका नंबर आने वाला है ही।

डॉक्टर बारी–बारी से मरीज को बुलाता है और इतना गैरसमझदार है कि सभी को नंबर से देखता है। वीआईपी मरीज, पुराने मरीज, उस जैसे नियमित मरीज को भी लाइन में लगा देता है। प्रेक्टिकल नहीं है। पर अच्छा है। सो लाइन में बैठना पड़ता है साहब। वरना हम तो एक से एक बड़े डॉक्टरों को दिखाते रहते हैं और दुनियाँ के अस्पताल हमने देखे हैं। दरअसल वह मेडिकल शॉपिंग की आदत से पीड़ित मरीज है। वह हर डॉक्टर को दिखाता रहता है। वह हर जाँच बार–बार कराता है। डॉक्टर न भी लिखे तो खुद ही करा आता है और फिर डॉक्टर को दिखता है कि आपने तो नहीं कहा पर हमने कहीं पढ़ा या सुना था कि सीटी स्केन भी करा लेना चाहिए, सो करा लिया। यह देखिये। वह उन औरतों की तरह है कि जो हर साड़ी की दुकान में घुस जाती हैं और हर स्टोर में घुसकर कुछ भी खरीदती रहती हैं। उन्हें 'कम्पल्सिव बायर' कहा जाता है– अनिवार्य खरीददार। ऐसा ही वह है। वह हर डॉक्टर के पास गया है। वह हर डॉक्टर के पास जाता है। वह हर डॉक्टर के पास जायेगा।

'कितनी देर और लगेगी शर्माजी?' उसने कंपाउंडरनुमा व्यक्ति से पूछा है, जो डॉक्टर के चेम्बर में आ–जा रहा है। 'वैसे रस्तोगीजो ... आपको कौन सी जल्दी है।' शर्मा ने हंसकर कहा।

फिर अंदर जाकर शर्मा ने डॉक्टर को बताया है कि सर, इसके बाद रस्तोगीजी का नंबर है। शर्मा ने मुस्कुरा कर यह बात कही है।

डॉक्टर ने सिर पर हाथ मार कर कहा है – मर गये यार। ..... चलो भेजो। ..... और एक कप चाय भी भेज देना।

डॉक्टर जानता है कि रस्तोगीजी की लम्बी कथा के दौरान चाय का सहारा रहेगा तो शायद वह एक बार उन्हें पुनः समझा पायेगा कि वे यह मेडिकल शॉपिंग कर–कर के अपने को मानसिक रोगी (न्यूरोटिक) और बना रहे हैं। ●●●